प्रखर संवाद



-हरिशंकर सक्सेना

प्रखर संवाद

(हरिशंकर सक्सेना का द्वितीय काव्य-संग्रह)

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

परम श्रद्धेय
प्रतिष्ठित साहित्यकार
डॉ. रामस्वरूप आर्य
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
वर्धमान कॉलेज, बिजनौर (उ.प्र.)
के लिए
सादर-समीक्षार्थ भेंट

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

हरिशंकर सक्सेना
27/09/2015

PUBLICATION

रंजन पब्लिकेशन

बरेली · फ़रीदाबाद

प्रखर संवाद

(गीत-नवगीत संग्रह)

हरिशंकर सक्सेना

रंजन पब्लिकेशन
बरेली · फ़रीदाबाद

ISBN-978-93-83954-20-9

© रचनाकार	:	मो.-9760783993
संस्करण	:	प्रथम, 2015
सहयोग राशि	:	रु. 100/-
शब्द-संयोजन	:	स्वस्तिक ग्राफ़िक्स, बरेली (मो.-91 9639523174)
आवरण सज्जा	:	राजीव सक्सेना-फोटो जर्नलिस्ट, बरेली (9897436602)
मुद्रक	:	द पिंक प्रिंट्स, नोएडा (09319930140)
प्रकाशक	:	रंजन पब्लिकेशन **'माल-द्वीप'** 44-उमंग, पार्ट-2, महानगर टाउनशिप, बरेली-243006 मो.-91 96395 23174
कॉर्पोरेट कार्यालय	:	**'माल-द्वीप'** 1548-एकता एन्क्लेव, तिलपत रोड, अमरनगर फ़रीदाबाद-121003 (दिल्ली एन.सी.आर.)
Email	:	ranjanpublication@gmail.com
Web site	:	www.maldweepgroup.net

PRAKHAR SAMWAAD
WRITTEN BY
HARI SHANKER SAXENA

सन्दर्भ

नवगीत बिम्बप्रधान काव्य है

गीत मानव मन की गहन अनुभूतियों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। इसका जन्म 'आह' से होता है। यह 'आह' केवल वियोगजन्य ही नहीं होती, अपितु परिस्थितिजन्य भी होती है। अभावग्रस्त जीवन में उपेक्षा, उत्पीड़न, अन्याय और अत्याचार भोगते हुए अथवा देखते हुए जब हृदय से एक 'आह' निकलती है और इस 'आह' की गहन अनुभूति सृजन की प्रेरणा देती है, तब कहीं जाकर कोई गीत जन्म लेता है। मेरे लेखन की भावभूमि इसी परिस्थितिजन्य 'आह' पर केन्द्रित है और देखा तथा भोगा हुआ यथार्थ मेरे सम्पूर्ण रचना-कर्म का आधार है।

मैं सन् 1974 से कहानी, लघुकथा, समीक्षा, गीत-नवगीत और ग़ज़ल के क्षेत्र में सक्रिय हूँ परन्तु इन सभी विधाओं में नवगीत-सृजन ही मेरी मुख्य साहित्यिक यात्रा है। मेरे नवगीत मेरे अन्त:जगत और बाह्यजगत के अनुभूत सत्य की स्वच्छन्द अभिव्यंजना हैं। मैं अपने काव्य-सृजन में उस व्यवस्था पर प्रहार करना जरूरी समझता हूँ, जो संवेदनशीलता और जीवन-मूल्यों को ध्वस्त करती है। मेरी दृष्टि में काव्य मनोरंजन अथवा मानसिक विलास की वस्तु नहीं, अपितु जन-चेतना और जन-कल्याण का एक सशक्त माध्यम है।

वस्तुत: गीत का अर्थ है जो गाया गया हो अर्थात् वह पद्यात्मक रचना जो गेयता के गुणों से सम्पन्न हो, गीत कहलाती है। गीत एक ऐसी संगीतमय अभिव्यक्ति है जिसके शब्दों पर भावों का पूर्ण आधिपत्य होता है। गीत को जीवन और जगत के प्रति संवेदनशील हृदय की प्रतिक्रिया भी कहा जा सकता है। गीत की मूल प्रकृति और उसका उद्देश्य गीत में भावों और विचारों के समन्वय को सौंदर्य-संवेदन के साथ अभिव्यक्त किए जाने में ही निहित है।

मेरा मानना है कि काव्य-सृजन एक गम्भीर जनधर्मी, समय-सापेक्ष और समाज-सापेक्ष रचनात्मक कर्म है। किसी भी रचना की सार्थकता उसकी संवेदना और प्रासंगिकता में ही निहित है। अत: रचना में अपने समय-सन्दर्भों से जुड़कर सामाजिक सरोकार को प्रमुखता देना अनिवार्य है, अन्यथा रचनाकार अपने व्यष्टिगत सत्य की समष्टिगत परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाएगा। मेरे नवगीतों की अन्तर्वस्तु समाज की विसंगतियों और विद्रूपताओं पर केन्द्रित है।

जहाँ तक गीत की प्रासंगिकता का प्रश्न है, तो गीत हिन्दी काव्य की सभी विधाओं में सबसे अधिक प्रभावित करता है। गीत अपने समय के मनुष्य के मन की वैध उपज रहा है। उसका रिश्ता बराबर अपनी मिट्टी और पानी से जुड़ा रहा है। संगीतात्मकता

उसकी सबसे बड़ी शक्ति है जो पाठक अथवा श्रोता को मंत्र-मुग्ध कर लेती है। गीत की अन्तर्वस्तु मनुष्य की अन्त:प्रकृति में मनुष्यता को उद्‌बुद्ध करते रहने का दायित्व सँभालती है। गीत की भावप्रवणता में सम्मोहन-शक्ति निहित रहती है। परम्परावादी गीत की लिजलिजी भावुकता और आत्मनेपद की परिधि से बाहर आकर ही गीत को नये रूप में स्थापित किया गया है। गीत का यह नया रूप ही नवगीत के नाम से पहचाना जाता है।

वस्तुत: नवगीत गीत का प्रतिद्वन्द्वी नहीं अपितु उसका 'आत्मनेपद से परस्मैपद' की ओर बढ़ता हुआ क़दम है। नवगीत छन्द और लय के अनुशासन से प्रतिबद्ध जनोन्मुखी रचनात्मकता का बढ़ता हुआ क़दम है। गीत को यदि सुगम संगीत की तरह सरल और सरस मान लिया जाय तो नवगीत पर शास्त्रीय संगीत जैसा प्रभावी आकर्षण परिलक्षित किया जाएगा। गीत की भावुकता जन-सामान्य को कुछ समय के लिए रससिक्त तो कर सकती है, परन्तु कुछ सोचने के लिए विवश नहीं कर सकती। गीत को मानसिक विलास की वस्तु मानने वालों को नवगीत पसन्द नहीं आयेगा।

नवगीत मुख्यत: बिम्बप्रधान काव्य है। प्राय: देखा गया है कि अभिधा में लिखे गये गीत को भी लोग नवगीत कह देते हैं, जबकि नवगीत की संरचना लक्षणा और व्यंजना शब्दशक्ति पर केन्द्रित है। नवगीत में मानवीकरण, रूपक और अन्योक्ति अलंकार विशेष रूप से देखे जा सकते हैं, अन्योक्ति के अभाव में व्यंजना सम्भव ही नहीं है। गीत में चित्र और नवगीत में बिम्ब उसके शिल्प-सौन्दर्य के आधारभूत तत्त्व हैं। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जब तक चित्र में अन्योक्ति नहीं होगी तब तक वहाँ कोई बिम्ब उभर ही नहीं सकता। नवगीत की यह बिम्बधर्मिता उसे छायावादी गीतों से प्राप्त हुई है। संक्षिप्ति, भाषा-दृष्टि और जनधर्मी चिन्तन उसे निराला के गीतों से प्राप्त हुआ है। नवगीत ने प्रगतिवादी गीतों से सामाजिक प्रेम की दृष्टि को अपनाया। यही उसका निजत्व से निकलकर सामाजिकता में विस्तार था।

निष्कर्षत: नवगीत ने परम्परावादी गीत की भावुकता और मुक्त छन्द की बौद्धिकता के बीच सन्तुलन स्थापित किया है। नवगीत में युगबोध को उभारने का आग्रह, जनोन्मुखी दृष्टि, जन-सामान्य की भाषा, नयी प्रतीक-योजना, बिम्ब-विधान, नया सौन्दर्य बोध, संवेदना और शिल्प की ताज़गी उसके प्रमुख तत्त्व माने गये। छन्द और लय के अनुशासन से प्रतिबद्ध नवगीत का भविष्य उज्ज्वल है और नवगीत ही काव्य की सभी विधाओं में सर्वाधिक प्रभावशाली एवं सार्थक विधा है।

– हरिशंकर सक्सेना
145,कर्मचारी नगर
बरेली(उ.प्र.)243122
मो.-9760783993

आपका अभिमत

हरिशंकर सक्सेना के गीत सर्वगुण सम्पन्न हैं, किसी प्रकार की खोट कसर से परे। उन्होंने नवगीत की संवेदना और उसकी अभिव्यक्ति के मुहावरे पर बखूबी अधिकार कर लिया है।

–देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'

हरिशंकर सक्सेना के गीतों में नवगीत की बनावट और बुनावट का मुहावरा अपनी पूरी अर्थछवियों के साथ उपस्थित है। वह नगर-बोध के कवि हैं, इसलिए उनके गीतों में महानगरीय जीवन की विसंगतियाँ खुलकर व्यंजित हुई हैं। उनके गीतों में पुराख्यानों और इतिहास से उठाये गये प्रतीकों का भी बखूबी उपयोग किया गया है।

–माहेश्वर तिवारी

भाई हरिशंकर सक्सेना नवगीत के एक सिद्धहस्त और महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनकी भाषायी संस्कारों से युक्त उत्कृष्ट रचनाधर्मिता इसकी साक्षी है। उनका प्रासंगिक कथ्य तो इस विधा के अनुरूप है ही, निर्दोष काव्य-शिल्प भी उन्हें विशिष्ट बनाता है। उनका समस्त कविकर्म सार्थक तथा स्तुत्य है।

–किशन सरोज

हरिशंकर सक्सेना ने प्रतीक-कथन और मिथक-बिम्बों का अपने गीतों में बड़ा ही सार्थक प्रयोग किया है। नवगीत के वर्तमान सरोकारों, सन्दर्भों एवं मुहावरों से कवि का बखूबी परिचय है, इसमें कोई शक नहीं है।

–कुमार रवीन्द्र

आप के गीतों में सधे हुए लयात्मक छन्द में मिथक और बिम्ब-योजना के माध्यम से परिवेश की विसंगति को आकर्षक शिल्प में उकेरा गया है। काव्यात्मक मूल्यहीनता के इस दौर में ऐसी आदमकद रचनाएँ अब कम ही देखने को मिलती हैं।

–महेश 'अनघ'

आपके गीत अनूठे हैं। इधर जो कुछ लिखा जा रहा है गीत के क्षेत्र में, आपके गीत उनसे बिल्कुल भिन्न हैं। आपका अपना मुहावरा है और आपकी अपनी शैली है, जो आपकी गीत-गरिमा को शिखर प्रदान करते हैं।

–डॉ. अश्वघोष

यह संग्रह मुख्यत: और मूलत: नवगीतों का पुष्प-स्तवक है, जिसमें उनके निजी राग-बोध और युग-चेतना का अपूर्व सौरभ-संगम है। मैं गीतकार की युग-सजगता और लोकपीड़ा से सम्पृक्ति का हार्दिक स्वागत करता हूँ। इन गीतों का दर्द संस्कृति का दर्द है, पीढ़ी के घायल मन की टीस है, और है अपने ज़माने की तड़पन। इन गीतों के अप्रस्तुत भी बहुत सटीक हैं। ये अप्रस्तुत कथ्य को अधिक पैना, गम्भीर और व्यापक बना देते हैं।

-डॉ. भगवान शरण भारद्वाज

कुछ समीक्षकों को लगता रहा है कि गीत में अपने समय-समाज के जटिल, संक्रमणशील और खुरदरे यथार्थ को सम्प्रेषित करने की क्षमता कम होती है। हरिशंकर सक्सेना के नवगीत इस पूर्वाग्रह को निरस्त करते हैं। उनके गीत-विन्यास में मिथकों का हस्तक्षेप महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली है। बिम्ब ग्रहण कराने के लिए गीतकार ने मिथकों से इतर जो अप्रस्तुत आज़माये हैं, वे गीत की अन्तर्वस्तु के अनुरूप सटीक और सार्थक हैं।

-डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ

बहुत ही श्रेष्ठ एवं प्रभावशाली नवगीतों के सृजन हेतु हार्दिक बधाई। आप मौलिक काव्यानुभूति एवं नैसर्गिक प्रतिभा के धनी हैं। वर्तमान पीढ़ी के नवगीतकारों में आपका नाम विशिष्ट रूप से उल्लेखनीय है।

-ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग'

संग्रह के अक्षर-अक्षर में व्यथाओं की अभिव्यक्ति है। एक-एक वाक्य आलोक-ऋचा है। अभिव्यक्ति को मौलिक सौन्दर्य दिया है। आर्थिक वैषम्य की ज्वाला में जलते प्राणों का दाह मर्मस्पर्शी शब्दों में प्रकट हुआ है। सामाजिक विसंगतियों का इतना सुन्दर वर्णन, कम शब्दों में दर्द का महासागर बाँधना बहुत बड़ा कार्य है।

-राज बहादुर 'विकल'

एक-एक गीत में कवि का जन-सरोकार छलछला रहा हैं। इस विपरीत समय की चुनौती में आम जन कितना बेबस, लाचार स्वयं को महसूस कर रहा है-इसकी गहरी संवेदनात्मक भावाभिव्यक्ति आपने की है। छू गयीं कविताएँ मर्म को।

-चित्रा मुद्गल

आपके नवगीत सचमुच श्रेष्ठ हैं। इनमें आपकी लोक-चेतना, ग्राम्य बोध, स्थिर बिम्ब, गतिशील बिम्ब, मिथकीय बिम्ब, प्रतीक, अलंकार आदि के प्रयोग सार्थक हैं। आप जीवन से जुड़े गीतकार हैं। आपने छन्द की मर्यादा को कहीं भंग नहीं किया, यह आपकी अन्यतम विशेषता है।

-डॉ. यायावर

आपने ताल, छन्द, लय सभी का निर्वाह करते हुए इन गीतों को रूपाकार दिया है। गीत-तत्त्व की गेयता का निर्वाह खूब किया है। नवगीत पर जहाँ भी काम होगा, वहाँ 'दिन हुए धृतराष्ट्र' का उल्लेख अवश्य किया जायेगा।

-बालकवि बैरागी

वास्तव में आपके गीत अलग ऊर्जा प्रदान करते वाले हैं। नई दिशा, नये बिम्ब, नई भाव-भंगिमा लिए गीतों के संसार में अपना वर्चस्व स्थापित करेंगे। आपके आक्रोश में भी एक नये सृजन का मधुर आकर्षण विद्यमान है।

-ज्ञानवती सक्सेना

संग्रह के सभी नवगीत विषयगत प्रतिबद्धता और शिल्पगत नवीनता का निर्वाह करते हैं। कथ्य की नवीनता, सम्प्रेषणीयता और भाव-चेतना सहज ही आकर्षित करती है। नवगीतकार ने कटु यथार्थ को पूरी संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया है। हरिशंकर सक्सेना नवगीत के सशक्त हस्ताक्षर हैं, इसलिए उनका कथ्य और शिल्प परिपक्व है।

-रमेश गौतम

'दिन हुए धृतराष्ट्र' में अनेक पंक्तियों की सूत्रात्मकता मन को स्पर्श कर गई। आपने निष्ठापूर्वक गीत-यात्रा की है। समय की स्लेट पर उसके चिह्न अवश्य पहचाने जायेंगे।

-डॉ. श्याम निर्मम

आपके सभी नवगीत सुन्दर, सरस और भावप्रवण हैं। नये प्रतीकों, बिम्बों एवं शब्द शक्तियों द्वारा आपने इन रचनाओं को जो स्तरीयता एवं गम्भीरता प्रदान की है, वह निश्चय ही स्तुत्य एवं सराहनीय है।

-डॉ.रोहिताश्व अस्थाना

आपकी रचनाएँ विश्वास दिलाती चलती हैं कि आप नवगीत के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। आपके गीतों की भाषिक बुनावट में जहाँ पारम्परिकता की मिठास है, वहीं कथ्य में समय की फाँस करकती है। विशेष बात यह है कि अधिकतर विरोधाभासी कथनांशों के द्वारा त्रासद जीवन मूल्यांकित हुआ है, जो रचनादृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

-वीरेन्द्र आस्तिक

आपकी इन कविताओं में युगीन विसंगतियों की प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है। इसके लिए आपने सटीक प्रतीकों का प्रयोग किया है।

-डॉ. ऋषि कुमार चतुर्वेदी

श्री हरिशंकर सक्सेना जी के गीत एवं नवगीत उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की प्रतिच्छाया और उनके विशद चिन्तन के साक्षात् विग्रह के मानिन्द हैं। दुनियाबी उखाड़-पछाड़ से दूर उनकी सतत एवं सघन एकान्त साधना ही उनकी रचनाओं को अपनी अभिव्यक्ति प्रदान कर पाठकों को यथार्थ का बोध करा रही है। उनकी रचनाओं में जीवन-संघर्ष, सामाजिक विद्रूपता, राष्ट्रीय चेतना आदि विषयों का गम्भीर चिन्तन स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है।

-डॉ. रंजन विशद

हरिशंकर सक्सेना हमारे समय के बहुत वरिष्ठ कवि हैं। 'दिन हुए धृतराष्ट्र' कवि की निर्मल हृदय से की गयी लम्बी तपस्या का परिणाम है। इस कृति का कवि आक्रोश का कवि है। असन्तोष इसका मुख्य स्वर है। जागरण इसका मूलमंत्र है। जनचेतना कवि का ध्येय है। वर्तमान व्यवस्था का चित्रण करने में कवि सिद्धहस्त है।

-रवि प्रकाश

किसी भी रचना का उद्देश्य पाठक के हृदय और मस्तिष्क को उद्बुद्ध कर सामाजिक व्यवस्था को सकारात्मक दिशा देना होता है। यह कार्य नवगीतकार श्री हरिशंकर सक्सेना ने 'दिन हुए धृतराष्ट्र' में बखूबी किया है। संग्रह की रचनाओं का भावबोध गहन विचारोत्तेजक धरातल से उकेरा गया है। रचनाओं का सृजन प्रायः लक्षणा और व्यंजना में किया गया है।

-डॉ. कुसुम

हरिशंकर सक्सेना के गीत हृदय और मस्तिष्क को झकझोर देने वाले हैं। बहुत गहरे डूबकर लोक-जीवन से आत्मिक लगाव-जुड़ाव के साथ रचे गये हैं ये गीत। इतिहास की पूँजी हैं ये गीत ।

-सार्थ

'दिन हुए धृतराष्ट्र' में संकलित कविताओं का संसार बहुत विस्तृत है। इसमें गहरा इतिहास-बोध और युग-बोध है। हरिशंकर सक्सेना जिन बिम्बों को अपनी रचनाओं में लाये हैं वे भी ख़ासे अनूठे हैं। इनमें एक पूरी सदी की चिन्ताएँ हैं।

-'अमर उजाला' से

हरिशंकर सक्सेना ने बेहद सुदृढ़ बिम्ब-योजना और समृद्ध प्रतीक-विधान के साथ जो गीत रचे हैं वे नवगीत के सबल इतिहास का अध्याय हैं। उन्होंने अपने नवगीतों के माध्यम से अपने प्रगतिशील चिन्तन और शास्त्रीय सिद्धि का परिचय दिया है।

-'दैनिक जागरण' से

अनुक्रम

नवगीत

गीत

नवगीत

नागफनियाँ पंखुरी पर
लिख रहीं क़ानून
इस व्यवस्था ने पिया है
आदमी का ख़ून

–हरिशंकर सक्सेना

आहत बहुत हुए

हँसते रिश्तों को अपनाकर
आहत बहुत हुए
बरगद की छाया में जाकर
आहत बहुत हुए

इतने बौने मिले कि अपना
क़द ही भूल गये
विश्वासों के स्वप्न सुनहरे
फाँसी झूल गये

अमराई का मान बढ़ाकर
आहत बहुत हुए

अनगिन तीखी मुस्कानों ने
ऐसा व्यूह रचा
कोई भी अभिमन्यु समर में
जीवित नहीं बचा

इन्द्रधनुष की महिमा गाकर
आहत बहुत हुए

यहाँ चाँदनी के मौसम में
संवेदन बहरा
बड़े मंच के परिसर में भी
साँसों पर पहरा

चमत्कार को शीश नवाकर
आहत बहुत हुए

प्रखर संवाद

बिजलियों की कोख से जन्मी
घटाओं से प्रखर संवाद कर लो

स्वर्ग जैसे पारिजातों की
फसल मिलती नहीं
कंकाल बोकर
क्या मिलेगा
खौलते तेज़ाब की
काली नदी में हाथ धोकर

लोकतंत्री फाइलों में क़ैद
फिर भागीरथी को याद कर लो

हो गया खूँखार सूरज
रुग्ण फिर
शीतल हवाओं की कहानी
मछलियों के भाग्य
बदहाली लिखी
अब लुप्त क्षिति का रंग धानी

राजपथ की आँधियों से ध्वस्त
अनगिन झुग्गियाँ आबाद कर लो

पारस नहीं मिला

मोह-मार्ग के
अंधकार से
पाया यही सिला
चट्टानों से टकराये
पर, पारस नहीं मिला

बोधि-वृक्ष का परिसर सूना
पौधे मुरझाए
खुशियाँ देने वाले बादल
इधर नहीं आए

मगरमच्छ द्वारे आ बैठा
किससे करें गिला

रक्त-पसीना-आँसू अब भी
अपमानित होते
नेह-निमंत्रण के अक्षर फिर
अपनापन खोते

'कबिरा' जैसी मानवता का
सरसिज नहीं खिला।

सूरज के पुत्रो

शयन-कक्ष से बाहर निकलो
सूरज के पुत्रो!
अंधकार का राजतिलक
फिर होने वाला है

धर्मराज को लगा चिढ़ाने
नौकरशाही राज
लज्जाशीला अबलाओं की
कौन बचाए लाज

'कीचक' का आतंक
'भीम' अब
ढोने वाला है

अस्त्र-शस्त्र त्रेता-द्वापर के
बस इतिहास हुए
दुष्टदलों के नागपाश में
वे परिहास हुए

कर्णधार भी
रक्षक का 'हक'
खोने वाला है

छल-प्रपंच में फँसी 'अहल्या'
पत्थर-सा जीवन
अश्रुगैस के चक्रवात से
जनता में क्रन्दन

लोकतंत्र का
आहत प्रहरी
सोने वाला है

सदी का दंश

पीठ पर
फिर इस सदी का
दंश गहराया

पत्थरों से मेल करता
बादलों का दल
क्रूरता की परिधि में फिर
आ गया है कल

यातनाओं के शिविर ने
जाल फैलाया

आप कलियों को सुरक्षा
दे नहीं पाये
मोरचा कट्टर फिज़ा से
ले नहीं पाये

टल नहीं पाया अभी
आतंक का साया

फिर हवा में ज़हर भरती
क्रूर पंचायत
तितलियों के पर कतरती
क्रूर पंचायत

जंगलों की संस्कृति ने
कहर बरपाया

दोमुँहे लोग

नगर-नगर दोमुँहे लोग
'खादी' से बतियायें

शीशे का घर बनी हवेली
क़ैदी पुरवाई
सज़ायाफ़ता पहरे पर
ऊँची पदवी पाई

द्वारपाल निर्ममता से
'होरी' को धकियायें

सन्नाटा तोड़ेगा जो भी
उसकी खैर नहीं
जयचन्दों के घर से अब तक
कोई बैर नहीं

काले धंधे की विरुदावलि
मन ही मन गायें

उत्पीड़न के अस्त्र-शस्त्र
सबके अद्भुत गहने
बड़े मंच पर कर्णधार सब
पुष्प-कवच पहने

रोज़ी-रोटी के सवाल पर
बेहद खिसियायें

धुंध का सैलाब

आ रहा है धुंध का सैलाब
अब तो जागिए

आज घर की लाज
चहुँदिश 'कीचकों' से त्रस्त है
रहनुमाई राग-रँग की
वीथियों में मस्त है

हर सुरक्षा लग रही है ख़्वाब
अब तो जागिए

हर क़दम पर ख़ौफ़
पैराशूट से उतरा यहाँ
आस्तीनों में छिपे
ग़द्दार से ख़तरा यहाँ

दाँव पर लगती वतन की आब
अब तो जागिए

मुस्कुराती गन्ध
नफ़रत की हवा में खो गई
आस्था भी 'गोधरा'-सी
रक्तरंजित हो गई

रैलियों में बँट रहा तेज़ाब
अब तो जागिए

रास नहीं आया

दुनिया का
कुछ अजब तमाशा
रास नहीं आया

मरुथल जैसी डगर
पाँव में छाले बहुत सहे
मोम सरीखे पंछी के पर
सूरज रोज दहे

द्वार हमारे गोकुल-सा
मधुमास नहीं आया

अनगिन तीखी मुस्कानों का
मेला यहाँ लगा
दुर्लभ वे सद्भाव कि जिनसे
मिलती नहीं दगा

शर-शय्या पर देख
उपमान
युधिष्ठिर पास नहीं आया

कालकूट पी रहे समय का
शुभ ग्रह भी सोये
अनहोनी से उबर न पाये
दुर्दिन भी ढोये

हित-अनहित के बीच
सुखद अहसास नहीं आया

तीखी हवाएँ

हाथ में कोड़ा लिए
तीखी हवाएँ आ गयीं

फिर समय के वक्ष पर
छल-छद्म के दलदल हुए
हाथ 'गीता' पर रखा
फिर भी न गंगाजल हुए

आस्थाएँ क्रूरतम अभिशाप से
मुरझा गईं

यातनाओं के महाजन से
हमें भी ऋण मिला
अर्धसामन्ती व्यवस्था का
यही है सिलसिला

लाल बहियों में उलझकर
पीढ़ियाँ घबरा गईं

राजपथ पर जो गए
वे लौट कर आये नहीं
सौम्यता पगडण्डियों की
अब उन्हें भाए नहीं

लाजवन्ती धारणाएँ
किस क़दर पथरा गईं

अग्निगर्भा

फिर अघोषित लग रहे प्रतिबन्ध
मन घायल हुआ!

आँधियों से जूझकर
फिर बोधितरु आहत हुआ
और पक्षाघात की भी
लग गई उसको दुआ

अग्निगर्भा हो गये सम्बन्ध
मन घायल हुआ!

ख़ौफ़ ने सौ वर्जनाएँ
गोद डालीं हाथ पर
कामला से घिर गये
अधिसंख्य फिर नीलाभ चर

ज़िन्दगी बस हो गई अनुबन्ध
मन घायल हुआ!

छद्म निश्छलता लिए
अधिभार घर आते रहे
टाँककर पैबन्द हम
हर हाल मुस्काते रहे

आस्था ने तोड़ दी सौगन्ध
मन घायल हुआ!

सदी की भूल

हो गया अभिशप्त फिर
तालाब का पानी
मछलियों को सूर्य का
आतंक डसता है!

रोज ज़ख़्मी हो रहे हैं
अब कमल के फूल
पीढ़ियाँ ढोती रहेंगी
हर सदी की भूल

हादसा ही दर्द का
इतिहास लिखता है!

नागफनियाँ पंखुरी पर
लिख रहीं क़ानून
इस व्यवस्था ने पिया है
आदमी का ख़ून

सभ्यता का शर्म से
सिर आज झुकता है!

विकलांग प्रश्न

बढ़ रही तम की
धुएँ से मित्रता
सूर्य का रथ
इस दिशा में लाइए।

'कीचकों' के हाथ
लंबे हो गए
खेत में कंकाल
फिर वे बो गए
फँस गए हैं 'कृष्ण'
किस जंजाल में
अब 'सुदर्शन-चक्र' ही
चलवाइये!

प्रश्न फिर विकलांग
होते जा रहे
उत्तरों के जुल्म
उन पर ढा रहे
इस क़दर लाचार
तेवर देखकर
'सव्यसाची' की
कथा दोहराइये!

टूटते सन्दर्भ
जलते उम्रभर
मौन सम्बोधन
लहू से तर-ब-तर
पीठ पर आघात की
पीड़ा असह
आप कुछ तो
आकलन करवाइये!

मोरपंखी भावनाएँ

अब सितारे
झोपड़ी पर
गाज से गिरते

मोरपंखी भावनाएँ
हो गयीं ओझल
है विरल मिलना यहाँ
व्यवहार भी निश्छल

राजहंसों के मुखौटे
ओढ़कर बगुले
मानसर में मुक्त होकर
रोज ही तिरते

हम बबूलों के तले रह
हो गये ज़ख़्मी
आज अपने खेत पर ही
बन गये शिकमी

मौन बरगद की शरण में
पहुँचने वाले
हर दिशा में रहज़नों के
जुल्म से डरते

कितने विषधर

कूटनीति ने
जब-जब कोई
पासा फिंकवाया
समय 'पार्थ' को
नागफनी के
जंगल में लाया

कितने विषधर यहाँ
दूध के धोये से लगते
मेहनतकश को क़दम-क़दम पर
मनचाहा डसते

अग्निबाण-सा
लगा यहाँ पर
अपनों का साया

निश्छल हवा नहीं मिलती अब
घर के परिसर में
धूप-चाँदनी क़ैद हो गयी
शीशे के घर में

नयी पौध का
पत्ता-पत्ता
भय से मुरझाया

आस्था के स्वर

'मूल्य' जीवन के सभी
लगने लगे छलना

खोज थी अमृत-कलश की
पर मिले विषधर
वेदना में ढल गये हैं
आस्था के स्वर

इस परिस्थिति में हमेशा
हाथ ही मलना

भूमि की हर पर्त सूखी
और आँखें नम
हर क़दम पर मिल रहे हैं
बीहड़ों के ग़म

बेबसी को
गाँव-बस्ती में अभी चलना

घाटियों में खो गया है
फिर अमन का नाम
एक सन्नाटा छिपाये
दर्द का कुहराम

ज़िन्दगी को
यों समय के शाप से जलना

रहनुमाई काँचघर में

देखकर नंगे बदन
परिचित समस्या द्वार पर
आज फिर बेपर्दगी
अपराध घोषित हो गयी

फूल-पत्ती बाँटने को
वृक्ष आपस में भिड़े
जंगलों की संस्कृति से
कौन जो खुलकर लड़े

सभ्यता भी इसी सदी के
राजपथ पर खो गयी

हर क़दम पर मुस्कुराता
सिर्फ़ बौनापन मिला
हो रहे आहत हमारे दिन
करें किससे गिला

रहनुमाई काँचघर में
तान चादर सो गई

आज फिर बारूद से
बस्ती सजायी जा रही
मछलियों की देह पर
गंधक चढ़ाई जा रही

शान्तिधर्मी साधना
विधवा सरीखी रो गयी

वृक्ष भूलों के

मौन है अब बाग में
आया हुआ माली

फिर समर्पित फूल सब
तीखी हवाओं को
पत्तियाँ भी ढो रही हैं
यातनाओं को

छा रहीं सब ओर से
परछाइयाँ काली

लग रहे उद्यान में
अंबार शूलों के
जी रहे हैं खोखले हो
वृक्ष भूलों के

चीखतीं कलियाँ यहाँ
कोई नहीं आली

हर डगर पर पाँव जलते
आग-सी छाया
प्यार की खुशबू यहाँ
मारुत नहीं लाया

पक्षियों के भाग्य में है
सिर्फ़ बदहाली

सज़ा मिली है

बँधुआ बनकर काटी हमने
उम्र जवानी की
अपने घर में सज़ा मिली है
काले पानी की

आज शहर में संत्रासों का
मेला लगा हुआ
षड्यंत्रों के सिद्ध उन्हें नित
देते नई दुआ

जय-जयकार हो रही
मंचों पर अभिमानी की

गर्म हवाएँ शीतलता को
परिभाषित करतीं
रोज हादसों की खबरें
इतिहास नया रचतीं

अर्थहीन हो गयी यहाँ
चर्चा क़ुर्बानी की

क़दम-क़दम पर हमें सदा
हमराही 'शल्य' मिले
इसीलिए अक्षुण्ण रहे
शोषण के सभी किले

पृष्ठभूमि कब बन पायेगी
नई कहानी की

यक्ष-प्रश्न

यक्ष-प्रश्न हल करो
अन्यथा कालदंश लहरायेगा

हर सिंहासन दंभग्रस्त है
स्वार्थ-लोभ का अंत नहीं
पाण्डुपुत्र-सा यहाँ सत्यव्रतधारी
अब सामन्त नहीं

लाक्षागृह में फँसे हुए हम
मार्ग कहाँ मिल पायेगा

मात्र कृष्ण की कूटनीति ही
कौरव-दल संहारक है
दैत्य-दमन के लिए अन्त में
ब्रह्म-अस्त्र ही मारक है

घातक होगी निद्रा गहरी
'अश्वत्थामा' आयेगा

छद्म मित्रता का नाटक फिर
आक्रामक हो सकता है
खुफिया आँखों की तन्द्रा से
जन-मानस सो सकता है

'जैसे को तैसा' रणबाँकुर
फिर इतिहास बनायेगा

गर्म हवाएँ

निश्छल संवादों के तन-मन
बहुत हुए जर्जर
निर्ममता के चक्रवात से
काँप रहे हैं घर

गर्म हवाएँ शीतलता पर
कोड़े बरसातीं
बौनेपन से आहत खुशियाँ
कभी नहीं आतीं

परियों की शहजादी के भी
काट दिए हैं पर

अपनेपन का छद्म रूप
जोंकों से बढ़कर है
घर के परिसर में 'होरी' का
जीना दूभर है

दसों दिशाओं से आते हैं
हमलावर विषधर

जुनून

पढ़ा आज अख़बार
सदन में
सज्जनता का ख़ून हो गया
पैसा आज जुनून हो गया

जनपथ हो या राजमार्ग हो
काँटे बिछे हुए हर पथ पर
लूटपाट में 'अपने' अव्वल
आगे चलना सोच-समझकर

पर-पीड़ा का
पाठ पढ़ाना
कुर्सी का क़ानून हो गया
पैसा आज जुनून हो गया

जिसको समझा अपना वह तो
दुर्योधन के साथ मिल गया
षड्यन्त्रों के विजय-पर्व से
दुरभिसन्धि का रूप खिल गया।

सदाचार की पुस्तक में फिर
कदाचार मज़मून हो गया
पैसा आज जुनून हो गया

बस्ती में

ज़हरीली बह रहीं हवाएँ बस्ती में
बदहाली भर रहीं दिशाएँ बस्ती में

नई फसल को
मार गया फिर से पाला
क्रूर हो गया
गाँव-शहर का रखवाला

निर्दोषों को मिलीं सजाएँ बस्ती में

पक्षी घायल हुए
फूल फिर मुरझाए
नागफनी की
खुशहाली के दिन आए

लिखी जा रहीं कंस कथाएँ बस्ती में

आदम-युग का
रूप यहाँ फिर से आया
कंकालों-सी
मिली हमें जर्जर काया

किसको अपनी व्यथा सुनायें बस्ती में

अब क्या होगा

लोकतंत्र पर
भस्मासुर का वरदहस्त
अब क्या होगा
राजमार्ग के
दागी घोड़े हुए मस्त
अब क्या होगा

राजा ठहरा 'शक्तिमान'
जनता तो बस बेचारी है
अंधकार से पीड़ित जनता
अपना सब कुछ हारी है

शंखनाद करने की
कोशिश हुई पस्त
अब क्या होगा

गोकुल जैसे दिवस कहाँ अब
जीवन में वृन्दावन के
बर्फीले हमजोली बनते नहीं
कभी राही मन के

खुशहाली का सूरज
दिन में हुआ अस्त
अब क्या होगा

कहाँ सुनहरा कल

बाहर पर्व मनाने का क्रम
अन्दर जठरानल
टुकड़े-टुकड़े हुई ज़िन्दगी
कहाँ सुनहरा कल

महानगर की सड़कें
पगडण्डी को निगल रहीं
बर्फ़ीली चट्टानें भी
अब उन पर पिघल रहीं

दूर-दूर तक कहीं नहीं
दिखती है चहल-पहल

आदमख़ोर मछलियों पर
सागर इतराता है
शान्ति-सन्धि के प्रस्तावों
को भी ठुकराता है

लगता है अब पैदा होगी
इसमें बड़वानल

आसमान को लगे चिढ़ाने
बौने छत चढ़कर
ज़हर हवा में घुला
हुआ साँसें लेना दूभर

मरघट के सन्नाटे में
हिलता बूढ़ा पीपल

निठारी

कह रही माटी
निठारी गाँव की
एक दिन खिसकेगी धरती पाँव की

चक्रवर्ती तुम
कँगूरों के निवासी
पददलित जनता
कि जैसे मीन प्यासी

वेदना सुनते नहीं तुम गाँव की

'कुम्भ'–मज्जन से
नहीं तुम तर सकोगे
पाप का भी नाश
क्या तुम कर सकोगे

आस्था खंडित हुई है छाँव की

क्या उगाओगे यहाँ
कंकाल बोकर
सिर्फ़ नफ़रत ही बची
विश्वास खोकर

धज्जियाँ अब तो उड़ेंगी दाँव की

चीख़ बेमानी

यह ख़बर है ख़ास, देखो
आज के अख़बार में
लुट गया कोई मसीहा
रात पर-उपकार में

चल दिये सारे परिन्दे
छोड़कर निज घोंसले
पेड़ पर लकवा गिरा औ'
पस्त जड़ के हौसले

छल रहे हैं कुछ दरिन्दे
आदमी को प्यार में

चुभ रहीं बेभाव सुइयाँ
पेट की हर आँत में
फँस रही हर चीख़ बेमानी
सुनहरे दाँत में

लग गया है घुन बहुत
ईमान की पतवार में

आ रही है लू महल से
हाथ में मदिरा लिए
जल रहे तन झोपड़ी में
मुद्दतों से इसलिए

पड़ गयीं कितनी दरारें
देश की दीवार में

मत अंगार बिछाओ

जल जायेगा
मानचित्र यह
मत अंगार बिछाओ

मौसम की
बीमार हवा भी
आक्रामक लगती है
आदर्शों की
पगडण्डी पर
नागफनी उगती है

मर जायेगी
फ़सल यहाँ
मत खरपतवार उगाओ

जोंकें
पीकर रक्त हमारा
आदमक़द हो आयीं
शिरा-शिरा में
कालदंश की
लहरें फिर मुस्कायीं

राह ढूँढती
पीढ़ी को
मत नारों में उलझाओ

आदमख़ोर-सी दहशत

हादसों ने ज़िन्दगी को
हर जगह पतझर दिया

रोष की चिनगारियों को
बेबसी दफ़ना रही
एक आदमख़ोर-सी दहशत
यहाँ पर छा रही

सर्प जैसी नीतियों ने
घर ज़हर से भर दिया

आज 'मूल्यों' की वकालत
भी उपेक्षित हो रही
निष्कपटता द्वार पर
वनवासिनी-सी रो रही

जंग खायी रूढ़ियों ने
मन विषैला कर दिया

शान्तिधर्मी आचरण से
सिर्फ़ निर्वासन मिला
हो गए बेघर, उपेक्षा
का चला फिर सिलसिला

और फिर दुर्भाग्य ने
फुटपाथ भी जर्जर दिया

अभिशप्त नगर

ऐसी मिली यहाँ पर हमको
काँटों भरी डगर
नियति बन गया अब तो अपना
यह अभिशप्त नगर

अपना घर गैरों के हाथों
गिरवी रखा हुआ
दर-दर भटके रीते हाथों
खेला यही जुआ

गाँव-खेत-खलिहान उजड़ते
मिलती यही ख़बर

महानगर में 'सोत' नदी-सा
सुख का स्रोत नहीं
सागर पार लगादे ऐसा
कोई पोत नहीं

दावानल में फँसे हुए हैं
मिला न 'कृष्ण' इधर

मतिभ्रम का कारण बनता है
बोझिल सम्मोहन
कोई नहीं किसी का अपना
कैसा यह क्रन्दन

न्याय बाँटने वाले ही
ढाते हैं यहाँ क़हर

ज़िन्दगी के गाँव

खुशबुओं के दिन
लिखो फिर
बस्तियों के नाम

चल रहे हैं बर्फ़ पर हम
रोज नंगे पाँव
खो गये अब धूप ओढ़े
ज़िन्दगी के गाँव

आज गोकुल-सा
सुखद बचपन
हुआ गुमनाम

बुन रहीं जलकुम्भियाँ फिर
एक मायाजाल
बोधितरु की छाँव में अब
पल रहे हैं व्याल

ज़िन्दगी को
दे रही दस्तक
सिहरती शाम

आवारा मौसम में

बूढ़ी रातें, गुमसुम गलियाँ
संगीनों के पहरे
घर-घर न्याय बाँटते देखे
अँधे-गूँगे-बहरे

संज्ञाशून्य हो रहीं किरणें
आवारा मौसम में
शीतलहर के जुल्म सह रहीं
संरक्षण के भ्रम में

धरती की छाती पर
कितने
ज़ख़्म हो गये गहरे

रोज मुखौटे बदल रहे जो
घर में आग लगाते
कस्तूरी की गंध ओढ़कर
महापुरुष बन जाते

कालकूट पीने वाला
'सुकरात' कहाँ?
जो ठहरे

गीत

बेटी है सद्भावना, बेटी सुख-संसार।
बेटी चन्दन की लता, बेटी वन्दनवार।।

•

तुलसी-दल-सी पावनी, बेटी घर की लाज।
कोकिल जैसी कूक है, बेटी की आवाज़।।

•

बेटी ब्रज की बाँसुरी, मिथिला-सी सुकुमार।
बेटी से विख्यात है, ममता का संसार।।

•

-हरिशंकर सक्सेना

बेटी

दुनिया बदली, सुनो कबीरा
नई सदी आई
दुर्लभ क्यों बेटी की खुशियाँ
नई सदी आई।

आँगन की तुलसी जैसी
बेटी को विदा किया
सुधा-कलश देकर उसको
सारा विष स्वयं पिया

बेटी फिर भी भरे सिसकियाँ
नई सदी आई

बेटी है आलेखन जैसी
घर की सुन्दरता
कन्यादान कठिन है, फिर भी
इसमें तत्परता

लोभी की भी भींगें अँखियाँ
नई सदी आई

मन-वीणा का तार खुशी से
झंकृत होने दो
ममता की अवतार लाड़ली
उपकृत होने दो

सुख हो इतना, भूले सखियाँ
नई सदी आई।

बेटी घर की पावन गीता

बेटा ही कुलदीपक होता
यह सच्चा व्यवहार नहीं है
बेटी भी कुल की मर्यादा
ममता का संसार यही है

बेटी घर की पावन गीता
बेटी घर की गरिमा है
मात-पिता के सुख का सागर
बेटी तरल मधुरिमा है

बेटी है सौभाग्यदायिनी
वृन्दावन का प्यार यही है

तुलसी-दल-सी पावन बेटी
स्वस्तिक चिह्न बनाती है
मनमोहक आलेखन से जो
आँगन खूब सजाती है

लोकगीत की उपमा जैसी
करुणा का आगार यही है

जनकसुता-सी पावन बेटी
गंग-जमुन-जलधारा है
संघर्षों के पथ पर बढ़कर
अपना भाग्य सँवारा है

बेटी ही है शब्द-व्यंजना
लोकधर्म का सार यही है

•

भूल नहीं पाये

गाँव छोड़कर भी घर को
हम भूल नहीं पाये

नदी किनारे गाँव हमारा
पगडण्डी-सा जीवन
ढोर चराना, सिला बीनना
दीन-दलित का बचपन

नाव चलाने, नदी तैरने
को मन अकुलाये

मुखिया मूँछें खूब ऐंठता
रोज बदलता पाला
खेतों में मज़दूरी करके
जीवित है हलवाला

खेतों में ही 'होले' खाना
सबको मन भाये

कीचड़ ही कीचड़ गलियों में
गोबर-कूड़ा फैला
अंधकार में डूबी बस्ती
घर-आँगन मटमैला

पाँच वर्ष हम नेता जी को
याद नहीं आये

'लमही' जैसा गाँव नहीं वो
किससे अब बतियायें
राजनीति की दीमक से अब
कैसे उसे बचायें

'होरी' के सँग राहज़नी की
रोज ख़बर आये

उधार की धूप

गाँव-किसानों-चौपालों को
मिलती धूप उधारी में
'धनिया' का 'गोदान' असम्भव
टूट गई पिसनारी में

कहने को बिजली गाँवों में
नल भी कुछ सरकारी हैं
सूदख़ोर से कैसे निबटें
कर्जे भारी-भारी हैं

मुखिया मालामाल हो गया
मौज मिली बटमारी में

पैबन्दी कपड़ों में 'होरी'
अब भी आँसू पीता है
मजदूरी का टोटा हो तो
घास बेचकर जीता है

सूखी रोटी श्रम का फल है
चटनी ही तरकारी में

बच्चे नंगे पाँव खेत में
सिला बीनने जाते हैं
'धनिया' के सँग भूखे-प्यासे
कंडे भी पथवाते हैं

ढोर चराना लिखा भाग्य में
दाना नहीं कुठारी में

पर्वतों-सा दुख

ज़िन्दगी
हर रंग में टकरा रही है

मौत के मुख से निकलकर आ गया जब
ज़िन्दगी को फिर नये ढंग से निहारा
हाशिए पर ठेलता क़ानून निर्मम
ख़ून के रिश्ते यहाँ करते किनारा

पर्वतों-सा दुख सहा तो जान पाया
ज़िन्दगी उपहास करती जा रही है

सिरफिरा है मन, भटकता ढूँढता सुख
दिव्यदृष्टी है नहीं 'संजय' सरीखी
धैर्य सारा चुक गया, भय मुँह चिढ़ाता
होश में आने की पीड़ा बहुत तीखी

मुस्कुराहट फँस गई अब घोर तम में
जुगनुओं की ज्योति भी मुरझा रही है

मैं समय की चेतना का पक्षधर हूँ
पर निराशा ने मुझे निर्बल बनाया
टूटकर भी मैं अभी हारा नहीं हूँ
गिर गया अनजान लोगों ने उठाया

लेखनी का शौर्य जीवन से जुड़ा है
'शक्तिपूजा' की घड़ी फिर आ रही है

सद्भाव के दीपक

आज फिर
सद्भाव के दीपक जलाएँ

यह धरा है
ज्ञान-गरिमा से अलंकृत
शांतिधर्मी साधना
चहुँओर अंकित

हम यहाँ मधुपर्क से पूजन कराकर
नित्य इस पर सत्य की सरिता बहाएँ

इस धरा के
रत्न हैं अशफ़ाक-बिस्मिल
जगमगाता है
यहाँ इतिहास प्रतिपल

कर्म से अभिषेक करके हर क़दम पर
इस धरा को चाँद-तारों से सजाएँ

पूज्य हैं
रहमान-ईसा-बुद्ध-नानक
चर्च-मन्दिर
और मस्ज़िद प्रीति-मानक

हम तिरंगे को सदा माथा नवाकर
विश्व में निज हिन्द का गौरव बढ़ाएँ

भव्य तिरंगा प्यारा

सत्य-अहिंसा परमधर्म है
दिया हिन्द ने नारा
सब धर्मों को शिरोधार्य है
भव्य तिरंगा प्यारा

गुरुवाणी पर नतमस्तक हैं
भारत के नर-नारी
राम और रहमान एक हैं
कहती जनता सारी

सत्कर्मों से मोक्ष मिलेगा
यह विश्वास हमारा

सर्वधर्म समभाव हेतु
संतों ने अलख जगाए
वाल्मीकि-रैदास-कबीरा
सबके मन को भाए

यहाँ वीर अब्दुल हमीद ने
दुश्मन को ललकारा

पंचशील का नारा जग में
पण्डित नेहरू लाए
सत्-शिव-सुन्दर के सपनों को
जो साकार बनाए

लोकतंत्र में मुखरित होता
जनता का ही नारा

हे हिमालय!

हे हिमालय!
तू कभी नीचे न झुकना
मैं तुझे निज रक्त से सींचा करूँगा

वीरता का अर्घ्य देकर
मैं तुझे नित पूजता हूँ
पर, अमन के नाम पर मैं
चन्दनी वन ढूँढता हूँ

मैं तिरंगे की शपथ पर ही अडिग हूँ
शत्रु-मुख पर पाँव अंगद-सा धरूँगा

मौन युग की साधना का
स्वर हुआ चेतनमुखी है
आज फिर भागीरथी के
तीर पर श्रद्धा दुखी है

तू सुधा का स्रोत, शिव का मान रखना
मैं हलाहल ही सदा पीता रहूँगा

तू शहीदों के लहू से
हो रहा गर्वित गगन में
हाथ में लेकर तिरंगा
कीर्ति फैलाता भुवन में

मैं धरा पर एकता की रश्मियों से
राष्ट्र के विश्वास की झोली भरूँगा

आतंकवाद

आतंकवाद का महादैत्य
हत्यारा है मानवता का

आतंकवाद की नागफनी
जब धरती पर है सरसाती
फूलों का सीना छलनी कर
अपने जी को है भरमाती

आतंकवाद है वज्रपात
अस्तित्व मिटाता ममता का

आतंकवाद भू का कलंक
'ओसामा'-सा इसका चरित्र
अम्बर भी त्रस्त हुआ इससे
यह अंधकार का परम मित्र

आतंकवाद से जूझ रहा
सौहार्द-समन्वय जनता का

फिर उठो, साथ चलकर देखो
नानक-ईसा का पाठ पढ़ो
सद्भाव-शान्ति का मर्म समझ
बन्धुत्व-भाव की मूर्ति गढ़ो

हिंसा से कभी नहीं होता
अनुप्राणित जीवन समता का

माटी की सौगन्ध

सकल गुणों की खान
मधुरतम भारत देश हमारा
हमको प्राणों से भी बढ़कर
भव्य तिरंगा प्यारा

देशवासियो जागो
दुश्मन झाँक रहा सीमा पर
उग्रवाद ने पाँव पसारे
ज़ुल्म हो रहे माँ पर
माटी की सौगन्ध
करो कुर्बानी की तैयारी
अरिदल पर भारत की सेना
सदा रही है भारी

यही धर्म है, यही कर्म है
यही हमारा नारा
हमको प्राणों से भी बढ़कर
भव्य तिरंगा प्यारा

भारत का इतिहास
शहीदों की गाथा गाता है
'वन्दे मातरम्' का
अभिप्रेरक गीत हमें भाता है
यहाँ क्रान्तिकारी वीरों ने
अपना खून बहाया
निर्दय अंग्रेजों से लड़कर
अपना रंग जमाया

वीर देश का, वीर भूमि का
सपना सबसे न्यारा
हमको प्राणों से भी बढ़कर
भव्य तिरंगा प्यारा

भारत का गौरव

उदासी भरी शाम फिर जगमगाए
कोई देशद्रोही न घर बाँट पाए

यहाँ शान्ति-दूतों ने सद्भाव बोया
मगर वीरता ने न सम्मान खोया

हमें राष्ट्र की एकता ही लुभाए

यहाँ गंगा-जमुना ने कण-कण निखारा
शहीदों ने काटी सघन तम की कारा

यहाँ राष्ट्र-भक्तों ने सर भी कटाए

यहाँ ब्रह्मऋषियों ने सत् पथ दिखाया
विदेशों ने भारत से गुरु-मंत्र पाया

हमें आत्मबल ही सदा रास आए

है पंजाब की भूमि भारत का गौरव
औ' कश्मीर ने भी बिखेरा है सौरभ

कोई देश इसपे न नज़रें उठाए

वतन के लाड़ले वीरो

वतन के लाड़ले वीरो!
तुम्हें शत-शत नमन

तुम्हारे रक्त से
मस्तक हिमालय का सजा
तुम्हारे हाथ में
वीरत्व की ऊँची ध्वजा

हमेशा गर्व करता है
तुम्ही पर ये वतन

तुम्हारा कर्म फिर
इतिहास में अंकित हुआ
तुम्हारी शौर्य-गाथा से
भुवन परिचित हुआ

तुम्हारा नाम लेकर
हम करेंगे आचमन

तुम्ही हो हिन्द के गौरव
तिलक हो, ताज हो
तुम्ही रणभूमि पर
नित वीरता का साज हो

शहादत पर तुम्हारी
पुष्प बरसाता गगन
वतन के लाड़ले वीरो!
तुम्हें शत-शत नमन

मर-मिट जायेंगे

प्रेम-अहिंसा-खुशहाली का
बिगुल बजायेंगे
देश अगर हो संकट में तो
मर-मिट जायेंगे

नैतिकता के उपवन में
जो पतझर लाता हो
फूलों को कर नष्ट
गीत शूलों के गाता हो

ऐसे छद्म रूप मौसम को
सबक सिखायेंगे

यहाँ सर्वहारा का शोषण
जो करता आया
माँ के आँचल को शोणित से
जो रँगता आया

लोकतंत्र में उसको क्योंकर
हम सह पायेंगे

समता बोकर अब धरती का
रूप बदलना है
मानवता के घर-आँगन को
रोशन करना है

भेदभाव का ज़हर बढ़ा तो
'शिव' बन जायेंगे

उद्‌बोधन

जाग रहे सैनिक सीमा पर
तुम भी जागो, हम भी जागें
बलिदानों की गाथा गाकर
तुम भी जागो, हम भी जागें

भारत की पावन धरती पर
सत्य-अहिंसा के स्वर हैं
मन्दिर-मस्ज़िद-गुरुद्वारे औ'
परम पूज्य गिरिजाघर हैं

उनके प्रति सद्‌भाव बढ़ाकर
तुम भी जागो, हम भी जागें

अपना है कैलाश जहाँ पर
एक कंठ-विषपायी है
जिसकी किरपा से धरती पर
गंगा मैया आयी है

उसके सम्मुख शीश झुकाकर
तुम भी जागो, हम भी जागें

संघर्षों के कुरुक्षेत्र में
वर्तमान व्याकुल अपना
हमें याद रखना ही होगा
अमर शहीदों का सपना

सत्कर्मों के दीप जलाकर
तुम भी जागो, हम भी जागें

जनक सरीखे निर्विकार

फिर तिमिर हो रहा दुर्निवार
करना होगा अब इसे पार

हम बोधिवृक्ष के अनुगामी
पर, वीर शिवा की तेग-धार
हम वेदव्यास के वंशज हैं
रखते अर्जुन-सा बल अपार

यदि कंस-राज्य की नींव पड़ी
लड़ना होगा फिर आर-पार

हम कर्मवीर, श्रम-आराधक
करते अरण्य का मान ध्वस्त
हम क्रान्तिवीर, सूली चूमें
वासन्ती रँग में रहें मस्त

हम राष्ट्र हेतु नित जागरूक
पर, जनक सरीखे निर्विकार

ऊधम-बिस्मिल-अशफ़ाक-भगत
भारत माँ के सच्चे सपूत
थे अमन-चैन के हामी वे
पर, शस्त्र-क्रान्ति के अग्रदूत

उनके सपने साकार करो
चाहे हो जीवन तार-तार

दोहे

आँगन में उगने लगी, जब से खरपतवार।
बीहड़-हस्तक्षेप की, घटनाएँ भरमार।।

हवा विषैली हो गई, पेड़ों पर पतझार।
पगडण्डी काँटों भरी, विचरण है दुश्वार।।

मन में बैठा भेड़िया, मुख पर है मुस्कान।
विषधर जैसा आचरण, फिर भी है सम्मान।।

मिले हमें उपकार के, बदले में अपकार।
सब स्वारथ के मीत हैं, धोखे का संसार।।

पक्षपात के पक्षधर, चाटुकार-मक्कार।
पर-पीड़ा की चाह में, पथ में बोते ख़ार।।

पर-हित परमानन्द है, पर-पीड़ा है पाप।
दीन-दलित के भाग्य का, दूर करो अभिशाप।।

मोह-पाश अवरोध है, प्रेम-पाश उल्लास।
दम्भ दमन का दास है, क्रोध काल का ग्रास।।

काल-चक्र बलवान है, भाग्य-चक्र गतिमान।
पीड़ा देकर अन्य को, खुश होता नादान।।

पाप-पुण्य जाना नहीं, कुत्सित कर्म-विचार।
क्रूर-दुराचारी मनुज, क्षिति पर होता भार।।

अद्‌भुत पारस की तरह, सदाचार अनमोल।
दम्भ, क्रोध, छल छोड़कर, मीठी बोली बोल।।

दोहे

रात अराजकता मिली, दिन में भ्रष्टाचार।
लोकतंत्र में हो रही, इनकी जय-जयकार।।

ख़ूनी हर भूकम्प है, ख़ूनी हर तूफान।
लोकतंत्र पर घात से, जनता लहूलुहान।।

धरती बंजर कर रहे, सत्ता के पाषाण।
हरियाली की पौध के, सूख रहे हैं प्राण।।

आशुतोष है कौन अब, सब हैं मुद्रातोष।
पारिजात कैसे बने, निर्धन का सन्तोष।।

लज्जा की हत्या हुई, श्रद्धा लहूलुहान।
सदाचार है लापता, बन्दी है ईमान।।

रिश्तों ने हँसकर दिए, दिल पर इतने घाव।
खुशियाँ पत्थर हो गयीं, क्षीण हुआ सद्भाव।।

सच्चा हो यदि मित्र तो, कह लो मन की बात।
निश्छलता से ही मिले, खुशियों की सौगात।।

धैर्य-शौर्य से ही मिटे, जीवन का अवसाद।
पुण्य-पंथ के शत्रु हैं, कटुता वाद-विवाद।।

जीवन में सद्भाव से, मिलता सुख-सम्मान।
जिनके मन नफ़रत बसे, वे हैं निपट अजान।।

जीवन-नौका ले चलो, भव-सागर के पार।
केवट हो सत्कर्म औ', साहस की पतवार।।

प्रखर संवाद/ 62/हरिशंकर सक्सेना

रंजन पब्लिकेशन द्वारा पूर्व प्रकाशित कृतियाँ

कृति	लेखक/सं.	मूल्य
1.हिन्दूपति महाराणा प्रताप (स्व. पंकज जी द्वारा रचित महाकाव्य)	(सं.) आचार्य देवेन्द्र 'देव'	220.00
2.बाँग्ला-त्राण (भारत-पाक युद्ध पर आधारित प्रबन्ध काव्य)	(कवि) आचार्य देवेन्द्र 'देव'	160.00
3.मातेश्वरी गूँगा देवी (खण्ड-काव्य)	(कवि) सतीश मिश्र 'अचूक'	10.00
4.युगीन लघुकथाएँ (लघुकथा-संग्रह)	(कवि) आचार्य अरविन्द तिवारी	25.00
5.कथाएँ व्यर्थ हो गयीं (छन्द-संग्रह)	(कवि) आचार्य देवेन्द्र 'देव'	50.00
6.मुक्तक संसार (मुक्तक-संग्रह)	(कवि)आचार्य अरविन्द तिवारी	25.00
7.एकला राही (एक जीवन-वृत्त)	(सं.) डॉ. रंजन विशद	200.00
8.बचपन से पचपन तक	(कवयित्री) कृष्णा खण्डेलवाल 'कनक'	175.00
9.अश्रु ढले, गीत बने (गीत-संग्रह)	(कवि) आचार्य देवेन्द्र 'देव'	120.00
10.चलो, घर लौट चलें (गीत-संग्रह)	(कवि) एम. एल. शर्मा 'अश्रु'	100.00
11.गीत सागर (गीत-संग्रह)	(कवि) सतीश शर्मा	120.00
12.गायत्रेय (महाकाव्य-श्रीराम शर्मा आचार्य पर)	(कवि) आचार्य देवेन्द्र 'देव'	400.00
13.श्रीमद्भगवद्गीता (घनाक्षरी अनुवाद)	(कवि) शिवशंकर यजुर्वेदी	160.00
14.खुलती परतें (लघुकथा-संग्रह)	(लेखिका) राज विज	160.00
15.युवमन्यु (महाकाव्य-स्वामी विवेकानन्द पर)	(कवि) आचार्य देवेन्द्र 'देव'	120.00
16.मैं सुरभि हूँ (कविता-संग्रह)	(कवयित्री) डॉ. सुरभि प्रकाश	100.00
17.दीपशिखा (एक जीवन-वृत्त)	(सं.) उदितेन्दु 'निश्चल'	100.00
18.कहता है दिल (कविता-संग्रह)	(कवि) अजीत वर्मा	150.00
19.तुम किसी के हो चुके हो (गीत-संग्रह)	(कवि) डॉ. रंजन 'विशद'	220.00
20.आँजि दियो ब्रजधाम(ज्ञानवती जी का गीत-संग्रह)	(सं.) डॉ. रंजन 'विशद'	240.00
21.Souvenir (Invertis university)	con. Ashok kumar	120.00
22.एक यात्रा गधे के साथ (ललित-निबन्ध)	(ले.) डॉ. विनोद कुमार रस्तोगी	40.00
23.जनाग्रह (वर्तमान पीढ़ी की समस्याओं का नाट्यधर्मी औपन्यासिक निरूपण)	(ले.) सन्दीप कुमार यादव, नरेन्द्र पाण्डेय	220.00
24.यादों के बादल (शृंगारिक गीतों का संग्रह)	(कवि) कमलेश तोमर	120.00
25.रुक्मिणी मंगल (खण्ड-काव्य)	(कवयित्री) नेहा मिश्रा 'नैनी'	180.00

26.दायरे और मंज़िलें (कविता-संग्रह)	(रचनाकार) राहुल सिंह राठौड़ नेहा मिश्रा 'नैनी'	60.00
27.समर से अब डरत क्यों?(काव्य-संग्रह)	(रचनाकार) राहुल सिंह राठौड़ नेहा मिश्रा 'नैनी'	80.00
28.ऊधौ–गोपी–संवाद (घनाक्षरी छन्द-संग्रह)	(कवयित्री) नेहा मिश्रा 'नैनी'	50.00
29.कही-अनकही (ज्ञानवती जी के संस्मरण)	(सं.) डॉ. रंजन 'विशद'	180.00
30.बजरंग विरुदावली (छन्द-संग्रह)	(कवि) थम्मन लाल वर्मा 'विकल'	280.00
31.पिंजरे पड़ी ग़ज़ल (ग़ज़ल-संग्रह)	(कवयित्री) ज्ञानवती सक्सेना	240.00
32.अहसासों के अम्बार (काव्य-संग्रह)	(कवयित्री) डॉ. पूर्णिमा चन्द्रा	300.00
33.मेरा गाँव, मेरा देश (संस्मरण)	(ले.) प्रभुनाथ मिश्र	200.00
34.प्रकृति की गाथा (काव्य-संग्रह)	(कवयित्री) राजबाला 'धैर्य'	150.00
35.हमारी बात बेमानी नहीं है (ग़ज़ल-संग्रह)	(कवि) आचार्य देवेन्द्र 'देव'	250.00
36.कैकेयी (खण्ड-काव्य)	(कवि) रामकुमार द्विवेदी	100.00
37.गौ चालीसा	(कवि) चेतन नितिन खरे	10.00
38.अथ Rx (Medical prescription book)	(ले.) कैलाश बंजारा, डॉ. रंजन वर्मा	199.00
39.मदशाला	(कवि)एस.पी. सक्सेना	120.00
40.अधूरा ख़्वाब (सच्ची प्रेम कहानी)	(ले.) प्रताप	100.00
41.द्रव्यगुण विज्ञान	(ले.)डॉ. रामानन्द, प्रो. आर. के. तिवारी	340.00
42.हँस पड़े पलाश (गीत-संग्रह)	(कवि) आचार्य देवेन्द्र देव	250.00

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट–
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

प्रखर सं

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

कवि-परिचय



नाम : हरिशंकर सक्सेना
पिता का नाम : स्व. सुखनन्दन प्रसाद सक्सेना
माता का नाम : स्व. भगवती देवी
जन्म-तिथि : 7 जुलाई, सन् 1948
जन्म-स्थान : ग्राम-मितरोली, तहसील-बिसौली, ज़िला-बदायूँ (उ.प्र.)
सम्प्रति : हिन्दी-प्रवक्ता (सेवानिवृत्त), तिलक इण्टर कॉलेज, बरेली
रचना-विधाएँ : समीक्षा, कहानी, लघुकथा, गीत-नवगीत, ग़ज़ल आदि
प्रकाशित कृतियाँ : अँधेरे की पर्तें (कहानी-संग्रह) सन् 1985
दिन हुए धृतराष्ट्र (नवगीत-संग्रह) सन् 2005
सम्पादित कृतियाँ : पल्लवों की ओट से (काव्य-संकलन) 1978
सन्नाटा मत बुनो (नवगीत-संकलन) सन् 1988
काले दिन (कहानी-संकलन) सन् 1990
सम्पादन : निर्झरिणी (अनियतकालीन साहित्यिक पत्रिका)
प्रसारण : आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारण
पत्र-पत्रिकाएँ : सरस्वती, समीक्षा, सारिका, दिनमान, उत्तरार्द्ध, उत्तरगाथा, वर्तमान साहित्य, आजकल, शिखर, प्रकर, उद्भावना, मधुमती, हिन्दुस्तानी, हिमप्रस्थ, गवाह, प्रसंगवश, कादम्बिनी, अतएव, उत्तरप्रदेश, उत्तरायण, अक्षर शिल्पी, अपरिहार्य, समांतर, निष्कर्ष, शीराजा, काव्या, नये पाठक, विविध संवाद, बालवाणी, गोलकोण्डा दर्पण, प्रेसमैन, गौड़संस टाइम्स, मेरी सहेली, जन साहित्य, सप्तसिन्धु, शोधदिशा, युवक, गीतोत्सव, अक्षरा, हरिगंधा, गीत-गागर, जन-प्रतिबद्ध, साहित्य समीर, इंडियन एक्सपर्ट व्यूज़, पालिका समाचार, अनन्तिम, सेतु, सबेरा, संकेत, चेतना, अर्बाबे-क़लम, विनायक, मध्यप्रदेश सन्देश, रेल भारती, बात सामयिकी, हुड़दंग, गीतप्रिया, जंगलबुक, राष्ट्रीय सहारा, अमर उजाला, दैनिक जागरण, आज, नवभारत, दैनिक भास्कर, पंजाब केसरी, स्वतंत्र भारत आदि अधिसंख्य पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।
संकलन : विश्व लघुकथा कोश, नवगीत एकादश, शब्दपदी, नेह के सरसिज, कालदंश, परिबोध, नवगीत: सर्जन और समीक्षा, आकाशवाणी वार्ताएँ, नवगीत के नये प्रतिमान, गीत वसुधा, नवगीत: नई दस्तकें, माटी के हरसिंगार, जागो प्यारे हिन्दुस्तान, विशिष्ट साहित्यिक निबन्ध, कल्याण काव्य-कमलाकर, दोहों की चौपाल आदि में रचनाएँ सम्मिलित।
पुरस्कार/ सम्मान : पं. राधेश्याम कथावाचक साहित्य पुरस्कार-1990
रोटरी क्लब ऑफ बरेली सेन्ट्रल द्वारा वोकेशनल अवार्ड-1991
स्व. चन्द्रप्रकाश आर्य कमल सन्देश साहित्य पुरस्कार-1994
जैमिनी अकादमी, पानीपत द्वारा सम्मानित-1997
कवि गोष्ठी आयोजन समिति, बरेली द्वारा सम्मानित-2007
जीवनधारा वेलफेयर सोसायटी द्वारा हिन्दी-दिवस पर अभिनन्दन-2008
भारतीय पशु चिकित्सा अनुसन्धान संस्थान, बरेली द्वारा सम्मानित-2009
बदायूँ क्लब द्वारा हिन्दी साहित्य सेवी सम्मान-2014
संस्कार भारती, बरेली द्वारा सारस्वत सम्मान-2015
स्थायी निवास : 145-कर्मचारी नगर (तीसरी गली), बरेली -243122 (उ.प्र.) मो.-9760783993

ISBN 978-93-8395
9789383954209

रंजन पब्लिकेशन
बरेली · फ़रीदाबाद